इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
(छत्तीसगढ़)

लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पाठ्यक्रम

बी.पी.ए. (Bachelor of Performing Arts)

08 सेमेस्टर

सहायक विषय – लोक संगीत (DSE)

W.e.f. 2025-26

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग
बीपीए/बीपीए ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय – लोक संगीत (सेमेस्टर प्रथम)

भाग अ : परिचय			
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बीपीए) प्रमाणपत्र/डिप्लोमा/डिग्री/ऑनर्स		सेमेस्टर (प्रथम)	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	FLS(1)ET1	
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति – 01	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	डीएसई	
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुरूप	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	छत्तीसगढ़ी लोक संगीत और लोकनृत्यों में विशेष दक्षता प्राप्त करना इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है। सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर विद्यार्थी छत्तीसगढ़ी संस्कृति के लोकसांगितिक पक्ष से परिचित हो सकेगा।	
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	इस कोर्स को पूर्ण करने पर विद्यार्थी – • छत्तीसगढ़ प्रदेश के लोक संगीत की जानकारी प्राप्त करेंगे। • छत्तीसगढ़ के जन्म संस्कार, विवाह संस्कार एवं ऋतु संबंधी लोकगीतों की जानकारी प्राप्त करेंगे। • छत्तीसगढ़ प्रदेश में प्रचलित डंडा नृत्य, सुआ नृत्य, पंथी नृत्य की जानकारी प्राप्त करेंगे। • स्वर ज्ञान के साथ ताल की जानकारी प्राप्त करेंगे।	
7.	क्रेडिट मान	02 क्रेडिट	1 क्रेडिट = 15 घंटे
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई : 12)

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु

व्याख्यान – शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 30 अवधियाँ (30 घंटे)

इकाई	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	लोक संगीत का अर्थ, परिभाषा एवं छत्तीसगढ़ प्रदेश के लोक संगीत का सामान्य अध्ययन।	07
द्वितीय	छत्तीसगढ़ प्रदेश के निम्नलिखित लोकगीतों का परिचयात्मक अध्ययन। 1. जन्म संस्कार। 2. विवाह संस्कार। 3. ऋतु गीत	08
तृतीय	छत्तीसगढ़ प्रदेश में प्रचलित लोकनृत्यों का सामान्य अध्ययन। 1. डंडा 2. सुआ 3. पंथी	08
चतुर्थ	(अ) स्वर के आरोह–अवरोह तथा दस अलंकारों का अध्ययन। (ब) दादरा, कहरवा, दीपचंदी तालों की सामान्य जानकारी।	07

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

भाग स : सीखने के संसाधन
सीखने के संसाधन – पाठ्य पुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, ऑनलाइन संसाधन और अन्य
संदर्भ ग्रंथ – 1. प्रो. शरीफ मोहम्मद, मध्यप्रदेश का लोक संगीत 2. डॉ. भरत पटेल, लोकवाद्य वादन की विविध आयाम 3. डॉ. पीसी लाल यादव, छत्तीसगढ़ी संस्कार गीत 4. श्री रामकृष्ण तिवारी, छत्तीसगढ़ का लोक संगीत 5. डॉ. दीपशिखा पटेल, अंगराग का लोकतत्व

भाग द : आँकलन एवं मूल्यांकन			
प्रस्तावित सतत मूल्यांकन विधियाँ :			
अधिकतम अंक :	100	न्यूनतम अंक	40
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	30	न्यूनतम अंक	12
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	70	न्यूनतम अंक	28
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	विषय के अनुसार आंतरिक परीक्षा का आयोजन। (सैद्धांतिक और तकनीकी ज्ञान एवं प्रस्तुति)		
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	तीन खंड : खंड अ – वस्तुनिष्ठ प्रश्न। खंड ब – लघु उत्तरीय प्रश्न। खंड स – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न।		

19-7-25

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग
बीपीए/बीपीए ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय – लोक संगीत (सेमेस्टर प्रथम)

भाग अ : परिचय			
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बीपीए) प्रमाणपत्र/डिप्लोमा/डिग्री/ऑनर्स		सेमेस्टर (प्रथम)	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	FLS(1)EP1	
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	लोक संगीत की प्रस्तुति – 01	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	डीएसई	
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुरूप	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	छत्तीसगढ़ी लोक संगीत और लोकनृत्यों में विशेष दक्षता प्राप्त करना इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है। सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर विद्यार्थी छत्तीसगढ़ी संस्कृति के लोकसांगितिक पक्ष से परिचित हो सकेगा।	
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	इस कोर्स को पूर्ण करने पर विद्यार्थी – • छत्तीसगढ़ के जन्म संस्कार, विवाह संस्कार एवं ऋतु संबंधी लोकगीतों को सीखेंगे। • छत्तीसगढ़ प्रदेश में प्रचलित डंडा नृत्य, सुआ नृत्य, पंथी नृत्य को सीखेंगे। • स्वर ज्ञान के साथ ताल को सीखेंगे।	
7.	क्रेडिट मान	04 क्रेडिट	1 क्रेडिट = 15 घंटे
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई : 12)

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु

व्याख्यान – शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 60 अवधियाँ (60 घंटे)

इकाई	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	स्वर ज्ञान एवं अलंकारों के साथ दादरा, कहरवा, दीपचंदी तालों का अभ्यास।	10
द्वितीय	छत्तीसगढ़ प्रदेश के निम्नलिखित लोकगीतों का परिचयात्मक अध्ययन। 1. जन्म संस्कार 2. विवाह संस्कार 3. भोजली	20
तृतीय	(अ). लोकनृत्य के अनुकूल प्रारंभिक शारीरिक व्यायाम। (ब). छत्तीसगढ़ प्रदेश के निम्नलिखित लोक नृत्यों का प्रदर्शन 1. डंडा नृत्य 2. सुआ नृत्य 3. पंथी नृत्य	20
चतुर्थ	छत्तीसगढ़ के निम्नलिखित वाद्यों का वादन अभ्यास :– 1. मंजीरा 2. टिमकी	10

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसीलाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग
बीपीए / बीपीए ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय – लोक संगीत (सेमेस्टर द्वितीय)

भाग अ : परिचय			
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बीपीए) प्रमाणपत्र / डिप्लोमा / डिग्री / ऑनर्स		सेमेस्टर (द्वितीय)	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	FLS(2)ET1	
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति – 02	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	डीएसई	
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुरूप	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	लोक संगीत और लोकनृत्य का समन्वित पाठ्यक्रम होने के कारण विद्यार्थी लोकसंगीत के गीतपक्ष, स्वरपक्ष, तालपक्ष और वाद्यपक्ष के साथ ही नृत्य पक्ष पर भी साधिकार चर्चा एवं प्रदर्शन करने की क्षमता से परिपूर्ण हो सकेंगे।	
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	इस कोर्स को पूर्ण करने पर विद्यार्थी – • लोकगीत का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करेगें। • छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति में लोकगीतों की जानकारी प्राप्त करेंगे। • धार्मिक एवं मनोरंजन लोकगीतों की जानकारी प्राप्त करेंगे। • बालक–बालिकाओं के खेल गीत की जानकारी प्राप्त करेंगे।	
7.	क्रेडिट मान	02 क्रेडिट	1 क्रेडिट = 15 घंटे
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई : 12)

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु

व्याख्यान – शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 30 अवधियाँ (30 घंटे)

इकाई	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या / घण्टे
प्रथम	लोकगीत का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताओं का सामान्य अध्ययन।	07
द्वितीय	छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति में लोकगीतों की व्याप्ति।	08
तृतीय	धार्मिक एवं मनोरंजन पूर्ण लोकगीतों का सामान्य अध्ययन।	08
चतुर्थ	बालक–बालिकाओं के खेल गीत का परिचयात्मक अध्ययन।	07

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

भाग स : सीखने के संसाधन			
सीखने के संसाधन – पाठ्य पुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, ऑनलाइन संसाधन और अन्य			
संदर्भ ग्रंथ – 1. प्रो. शरीफ मोहम्मद, मध्यप्रदेश का लोक संगीत 2. डॉ. भरत पटेल, लोकवाद्य वादन की विविध आयाम 3. श्री रामकृष्ण तिवारी, छत्तीसगढ़ का लोक संगीत 4. डॉ. पीसी लाल यादव, छत्तीसगढ़ी लोकगीत, विविध आयाम 5. डॉ. दीपशिखा पटेल, अंगराग का लोकतत्व			
भाग द : आँकलन एवं मूल्यांकन			
प्रस्तावित सतत मूल्यांकन विधियाँ :			
अधिकतम अंक :	100	न्यूनतम अंक	40
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	30	न्यूनतम अंक	12
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	70	न्यूनतम अंक	28
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	विषय के अनुसार आंतरिक परीक्षा का आयोजन। (सैद्धांतिक और तकनीकी ज्ञान एवं प्रस्तुति)		
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	तीन खंड : खंड अ – वस्तुनिष्ठ प्रश्न। खंड ब – लघु उत्तरीय प्रश्न। खंड स – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न।		

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग
बीपीए/बीपीए ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय – लोक संगीत (सेमेस्टर द्वितीय)

भाग अ : परिचय			
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बीपीए) प्रमाणपत्र/डिप्लोमा/डिग्री/ऑनर्स		सेमेस्टर (द्वितीय)	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	FLS(2)EP1	
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	लोक संगीत की प्रस्तुति – 02	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	डीएसई	
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुरूप	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	लोकसंगीत और लोकनृत्य का समन्वित पाठ्यक्रम होने के कारण विद्यार्थी लोकसंगीत के गीतपक्ष, स्वरपक्ष, तालपक्ष और वाद्यपक्ष के साथ ही नृत्य पक्ष पर भी साधिकार चर्चा एवं प्रदर्शन करने की क्षमता से परिपूर्ण हो सकेंगे।	
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	इस कोर्स को पूर्ण करने पर विद्यार्थी – • छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति में व्याप्त लोकगीतों को सीखेंगे। • धार्मिक एवं मनोरंजन लोकगीतों को सीखेंगे। • बालक–बालिकाओं के खेल गीत को सीखेंगे।	
7.	क्रेडिट मान	04 क्रेडिट	1 क्रेडिट = 15 घंटे
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई : 12)

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु		
व्याख्यान – शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 60 अवधियाँ (60 घंटे)		
इकाई	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	पिछले पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।	10
द्वितीय	छत्तीसगढ़ के निम्नलिखित लोकगीतों का अभ्यास। 1. जस–पचरा गीत 2. देवार करमा 3. लोक भजन 4. बालक बालिकाओं के खेल गीत	20
तृतीय	(अ) कहरवा, दादरा एवं दीपचंदी ताल का दुगुन, चौगुन की लय में ताली देकर प्रदर्शन। (ब) निम्नलिखित लोकवाद्यों का लोक गीतों के साथ अधिकार पूर्वक वादन करना। 1. चटकोला 2. ठिसकी 3. हिरकी	20
चतुर्थ	निम्नलिखित लोकनृत्य एवं गीत का प्रदर्शनः– 1. गौर–माड़िया नृत्य 2. राऊत नृत्य 3. देवार करमा 4. गेड़ी नृत्य	10

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसीलाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
(छत्तीसगढ़)

लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पाठ्यक्रम

बी.पी.ए. (Bachelor of Performing Arts)

08 सेमेस्टर

मुख्य विषय - लोक संगीत (DSC)

W.e.f. 2025-26

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग
बीपीए / बीपीए ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय – लोक संगीत (सेमेस्टर प्रथम)

भाग अ : परिचय				
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बीपीए) प्रमाणपत्र / डिप्लोमा / डिग्री / ऑनर्स			सेमेस्टर (प्रथम)	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	FLS(1)CT1		
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति – 01		
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	डीएससी		
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुरूप		
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	छत्तीसगढ़ी लोक संगीत और लोकनृत्यों में विशेष दक्षता प्राप्त करना इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है। सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर विद्यार्थी छत्तीसगढ़ी संस्कृति के लोकसांगितिक पक्ष से परिचित हो सकेगा।		
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	इस कोर्स को पूर्ण करने पर विद्यार्थी – • छत्तीसगढ़ प्रदेश के लोक संगीत की जानकारी प्राप्त करेंगे। • छत्तीसगढ़ के जन्म संस्कार, विवाह संस्कार एवं ऋतु संबंधी लोकगीतों की जानकारी प्राप्त करेंगे। • छत्तीसगढ़ प्रदेश में प्रचलित डंडा नृत्य, सुआ नृत्य, पंथी नृत्य की जानकारी प्राप्त करेंगे। • स्वर ज्ञान के साथ ताल की जानकारी प्राप्त करेंगे।		
7.	क्रेडिट मान	02 क्रेडिट	1 क्रेडिट = 15 घंटे	
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई : 12)	

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु		
व्याख्यान – शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 30 अवधियाँ (30 घंटे)		
इकाई	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या / घण्टे
प्रथम	लोक संगीत का अर्थ, परिभाषा एवं छत्तीसगढ़ प्रदेश के लोक संगीत का सामान्य अध्ययन।	07
द्वितीय	छत्तीसगढ़ प्रदेश के निम्नलिखित लोकगीतों का परिचयात्मक अध्ययन। 1. जन्म संस्कार। 2. विवाह संस्कार। 3. ऋतु गीत	08
तृतीय	छत्तीसगढ़ प्रदेश में प्रचलित लोकनृत्यों का सामान्य अध्ययन। 1. डंडा 2. सुआ 3. पंथी	08
चतुर्थ	(अ) स्वर के आरोह–अवरोह तथा दस अलंकारों का अध्ययन। (ब) दादरा, कहरवा, दीपचंदी तालों की सामान्य जानकारी।	07

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

भाग स : सीखने के संसाधन
सीखने के संसाधन – पाठ्य पुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, ऑनलाइन संसाधन और अन्य
संदर्भ ग्रंथ – 1. प्रो. शरीफ मोहम्मद, मध्यप्रदेश का लोक संगीत 2. डॉ. भरत पटेल, लोकवाद्य वादन की विविध आयाम 3. डॉ. पीसी लाल यादव, छत्तीसगढ़ी संस्कार गीत 4. श्री रामकृष्ण तिवारी, छत्तीसगढ़ का लोक संगीत 5. डॉ. दीपशिखा पटेल, अंगराग का लोकतत्व

भाग द : आँकलन एवं मूल्यांकन			
प्रस्तावित सतत मूल्यांकन विधियाँ :			
अधिकतम अंक :	100	न्यूनतम अंक	40
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	30	न्यूनतम अंक	12
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	70	न्यूनतम अंक	28
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	विषय के अनुसार आंतरिक परीक्षा का आयोजन। (सैद्धांतिक और तकनीकी ज्ञान एवं प्रस्तुति)		
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	तीन खंड : खंड अ – वस्तुनिष्ठ प्रश्न। खंड ब – लघु उत्तरीय प्रश्न। खंड स – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न।		

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग
बीपीए/बीपीए ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय – लोक संगीत (सेमेस्टर प्रथम)

भाग अ : परिचय			
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बीपीए) प्रमाणपत्र/डिप्लोमा/डिग्री/ऑनर्स		सेमेस्टर (प्रथम)	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	FLS(1)CP1	
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	लोक संगीत की प्रस्तुति – 01	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	डीएससी	
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुरूप	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	छत्तीसगढ़ी लोक संगीत और लोकनृत्यों में विशेष दक्षता प्राप्त करना इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है। सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर विद्यार्थी छत्तीसगढ़ी संस्कृति के लोकसांगितिक पक्ष से परिचित हो सकेगा।	
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	इस कोर्स को पूर्ण करने पर विद्यार्थी – • छत्तीसगढ़ के जन्म संस्कार, विवाह संस्कार एवं ऋतु संबंधी लोकगीतों को सीखेंगे। • छत्तीसगढ़ प्रदेश में प्रचलित डंडा नृत्य, सुआ नृत्य, पंथी नृत्य को सीखेंगे। • स्वर ज्ञान के साथ ताल को सीखेंगे।	
7.	क्रेडिट मान	04 क्रेडिट	1 क्रेडिट = 15 घंटे
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई : 12)

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु		
व्याख्यान – शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 60 अवधियाँ (60 घंटे)		
इकाई	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	स्वर ज्ञान एवं अलंकारों के साथ दादरा, कहरवा, दीपचंदी तालों का अभ्यास।	10
द्वितीय	छत्तीसगढ़ प्रदेश के निम्नलिखित लोकगीतों का परिचयात्मक अध्ययन। 1. जन्म संस्कार 2. विवाह संस्कार 3. भोजली	20
तृतीय	(अ). लोकनृत्य के अनुकूल प्रारंभिक शारीरिक व्यायाम। (ब). छत्तीसगढ़ प्रदेश के निम्नलिखित लोक नृत्यों का प्रदर्शन 1. डंडा नृत्य 2. सुआ नृत्य 3. पंथी नृत्य	20
चतुर्थ	छत्तीसगढ़ के निम्नलिखित वाद्यों का वादन अभ्यास :– 1. मंजीरा 2. टिमकी	10

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग
बीपीए/बीपीए ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय – लोक संगीत (सेमेस्टर द्वितीय)

भाग अ : परिचय			
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बीपीए) प्रमाणपत्र/डिप्लोमा/डिग्री/ऑनर्स		सेमेस्टर (द्वितीय)	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	FLS(2)CT1	
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति – 02	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	डीएससी	
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुरूप	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	लोक संगीत और लोकनृत्य का समन्वित पाठ्यक्रम होने के कारण विद्यार्थी लोकसंगीत के गीतपक्ष, स्वरपक्ष, तालपक्ष और वाद्यपक्ष के साथ ही नृत्य पक्ष पर भी साधिकार चर्चा एवं प्रदर्शन करने की क्षमता से परिपूर्ण हो सकेंगे।	
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	इस कोर्स को पूर्ण करने पर विद्यार्थी – • लोकगीत का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करेगें। • छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति में लोकगीतों की जानकारी प्राप्त करेंगे। • धार्मिक एवं मनोरंजन लोकगीतों की जानकारी प्राप्त करेंगे। • बालक–बालिकाओं के खेल गीत की जानकारी प्राप्त करेंगे।	
7.	क्रेडिट मान	02 क्रेडिट	1 क्रेडिट = 15 घंटे
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई : 12)

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु		
व्याख्यान – शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 30 अवधियाँ (30 घंटे)		
इकाई	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	लोकगीत का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताओं का सामान्य अध्ययन।	07
द्वितीय	छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति में लोकगीतों की व्याप्ति।	08
तृतीय	धार्मिक एवं मनोरंजन पूर्ण लोकगीतों का सामान्य अध्ययन।	08
चतुर्थ	बालक–बालिकाओं के खेल गीत का परिचयात्मक अध्ययन।	07

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

भाग स : सीखने के संसाधन			
सीखने के संसाधन – पाठ्य पुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, ऑनलाइन संसाधन और अन्य			
संदर्भ ग्रंथ – 1. प्रो. शरीफ मोहम्मद, मध्यप्रदेश का लोक संगीत 2. डॉ. भरत पटेल, लोकवाद्य वादन की विविध आयाम 3. श्री रामकृष्ण तिवारी, छत्तीसगढ़ का लोक संगीत 4. डॉ. पीसी लाल यादव, छत्तीसगढ़ी लोकगीत, विविध आयाम 5. डॉ. दीपशिखा पटेल, अंगराग का लोकतत्व			
भाग द : आँकलन एवं मूल्यांकन			
प्रस्तावित सतत मूल्यांकन विधियाँ :			
अधिकतम अंक :	100	न्यूनतम अंक	40
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	30	न्यूनतम अंक	12
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	70	न्यूनतम अंक	28
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	विषय के अनुसार आंतरिक परीक्षा का आयोजन। (सैद्धांतिक और तकनीकी ज्ञान एवं प्रस्तुति)		
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	तीन खंड : खंड अ – वस्तुनिष्ठ प्रश्न। खंड ब – लघु उत्तरीय प्रश्न। खंड स – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न।		

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग
बीपीए/बीपीए ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय – लोक संगीत (सेमेस्टर द्वितीय)

भाग अ : परिचय				
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बीपीए) प्रमाणपत्र/डिप्लोमा/डिग्री/ऑनर्स			सेमेस्टर (द्वितीय)	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	FLS(2)CP1		
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	लोक संगीत की प्रस्तुति – 02		
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	डीएससी		
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुरूप		
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	लोक संगीत और लोकनृत्य का समन्वित पाठ्यक्रम होने के कारण विद्यार्थी लोकसंगीत के गीतपक्ष, स्वरपक्ष, तालपक्ष और वाद्यपक्ष के साथ ही नृत्य पक्ष पर भी साधिकार चर्चा एवं प्रदर्शन करने की क्षमता से परिपूर्ण हो सकेंगे।		
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	इस कोर्स को पूर्ण करने पर विद्यार्थी – • छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति में व्याप्त लोकगीतों को सीखेंगे। • धार्मिक एवं मनोरंजन लोकगीतों को सीखेंगे। • बालक–बालिकाओं के खेल गीत को सीखेंगे।		
7.	क्रेडिट मान	04 क्रेडिट	1 क्रेडिट = 15 घंटे	
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई : 12)	

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु		
व्याख्यान – शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 60 अवधियाँ (60 घंटे)		
इकाई	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	पिछले पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।	10
द्वितीय	छत्तीसगढ़ के निम्नलिखित लोकगीतों का अभ्यास। 1. जस–पचरा गीत 2. देवार करमा 3. लोक भजन 4. बालक बालिकाओं के खेल गीत	20
तृतीय	(अ) कहरवा, दादरा एवं दीपचंदी ताल का दुगुन, चौगुन की लय में ताली देकर प्रदर्शन। (ब) निम्नलिखित लोकवाद्यों का लोक गीतों के साथ अधिकार पूर्वक वादन करना। 1. चटकोला 2. ठिसकी 3. हिरकी	20
चतुर्थ	निम्नलिखित लोकनृत्य एवं गीत का प्रदर्शनः– 1. गौर–माड़िया नृत्य 2. राऊत नृत्य 3. देवार करमा 4. गेड़ी नृत्य	10

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग

स्नातक पाठ्यक्रम - बी.पी.ए. (मुख्य विषय)

उद्देश्य:-

1. **विद्यार्थियों की प्रतिभा के अनुरूप उनमें स्तरीय प्रदर्शनात्मक प्रवीणता का संचार करना |**
2. **विद्यार्थियों को भारतीय संगीत के इतिहास एवं शास्त्र पक्ष से अवगत कराते हुए प्रेरणास्वरूप उच्चकोटि के विभिन्न कलाकारों के योगदान से परिचित कराना |**
3. **विद्यार्थियों को गायन/वादन के प्रयोग पक्ष को लेकर उनकी सर्जनात्मक क्षमता को पुष्ट करना |**
4. **संगीत संबंधी शोध के विभिन्न प्रारम्भिक पहलुओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना |**
5. **विद्यार्थियों में मंचीय कला की अभिव्यक्ति विकसित करते हुए उन्हें मंचीय प्रस्तुति एवं संगीत की क्रमश उच्चस्तरीय साधना की ओर उन्मुख करना और उनके भीतर के कलाकार संपुष्ट करना |**
6. **विद्यार्थियों में भारतीय संगीत एवं संस्कृति का सम्प्रेषण करते हए संवर्धन करना |**

बी.पी.ए. प्रथम वर्ष

(मुख्य विषय - गायन/ स्वर वाद्य)

कोर्स 1- संगीतशास्त्र

Course Code- BMV/BMS- 101

क्रेडिट-04
पूर्णांक : 100

बाह्य मूल्यांकन **- पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25**
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

इकाई 1- संगीत, नाद, श्रुति, स्वर (शुद्ध, विकृत, चल, अचल), सप्तक (मंद्र, मध्य, तार), वर्ण, अलंकार (पल्टा), बोल (मिज़राब/जवा के बोल) प्रहार (आकर्ष, अपकर्ष) की जानकारी। आश्रयराग, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्जित स्वर, आरोह-अवरोह, रागस्वरूप (पकड़), राग की जाति (औडव, षाडव व सम्पूर्ण) का अध्ययन। अष्टक, पूर्वांग, उत्तरांग, आलाप, तान, की जानकारी।

इकाई 2- बाईस श्रुतियों में वर्तमान सप्तक की स्वर स्थापना। स्थायी, अन्तरा, संचारी, आभोग का परिचय। राग एवं थाट की परिभाषा तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन। दस थाटों के नाम व स्वर।

इकाई 3- शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय संगीत सुगम संगीत, चित्रपट संगीत, और लोक संगीत की संक्षिप्त जानकारी। ख्याल, लक्षणगीत, स्वरमालिका व रज़ाखानी गत का परिचय। छत्तीसगढ़ के सोहर गीत, विवाह गीत तथा सुआ गीत का सामान्य परिचय |

इकाई 4- गायन के परीक्षार्थियों के लिए तानपूरा तथा वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए अपने-अपने वाद्य का सामान्य परिचय तथा उनके विभिन्न अवयवों का सचित्र ज्ञान एवं उनके तारों को विभिन्न स्वरों में मिलाने की जानकारी।

इकाई 5- पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे, अमीर खुसरो, मानसिंह तोमर, स्वामी हरिदास एवं तानसेन का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान। छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों – श्रीमती तीजन बाई एवं श्री देवदास बंजारे का जीवन परिचय तथा लोकसंगीत के क्षेत्र में उनका योगदान |

संदर्भ ग्रन्थ :

1. संगीतांजलि भाग 1 एवं भाग 2 - पं. ओमकारनाथ ठाकुर
2. राग परिचय भाग 1 एवं भाग 2 - श्री हरीश चन्द्र श्रीवास्तव
3. सुबोध संगीत शास्त्र भाग 1-डॉ. तेज सिंह टांक

****

कोर्स 2 – क्रियात्मक सिद्धांत

Course Code- BMV/BMS- 102

क्रेडिट-04
पूर्णांक : 100
बाह्य मूल्यांकन - पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

इकाई 1- बिलावल, कल्याण एवं भैरव थाटों में अलंकारों का लेखन। राग यमन, बिलावल/अल्हैया बिलावल, भैरव एवं भूपाली का शास्त्रीय परिचय।
इकाई 2- पाठ्यक्रम के रागों में मध्यलय ख़्याल/रज़ाखानी गत की रचनाओं का तीन-तीन तानों/तोड़ों सहित भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लेखन।
इकाई 3- लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत), ठाह, मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, खाली, ठेका, आवर्तन की जानकारी।
इकाई 4- त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, रूपक एवं झपताल तालों का परिचय एवं ठाह सहित ताल-लिपि में लेखन।
इकाई 5- लगभग 300 शब्दों में संगीत संबंधी किसी विषय पर निबंध लेखन।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1, 2, 3 – पं. विष्णु नारायण भातखंडे
2. राग परिचय भाग 1 - श्री हरीश चन्द्र श्रीवास्तव
3. राग रूपान्जली – डॉ. पुष्पा बसु
4. संगीत निबंध संग्रह – पं. हरीश चन्द्र श्रीवास्तव

****

कोर्स 3 – प्रायोगिक

Course Code- BMV/BMS- 103

क्रेडिट-08
पूर्णांक : 100
बाह्य मूल्यांकन - पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

(पाठ्यक्रम के राग - यमन, बिलावल/अल्हैया बिलावल, भैरव एवं भूपाली)

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए-

- पाठ्यक्रम के रागों में एक- एक स्वर-मालिका एवं लक्षणगीत।
- पाठ्यक्रम के रागों में तीन-तीन तानों सहित एक-एक मध्यलय ख्याल।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए-

- पाठ्यक्रम के रागों में मध्यलय अथवा रज़ाखानी गत अथवा द्रुतलय की रचना। (तीन-तीन तानों/तोड़ों सहित)।

****

कोर्स 4 – प्रायोगिक

Course Code- BMV/BMS- 104

क्रेडिट-08

पूर्णांक : 100

बाह्य मूल्यांकन - पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25

आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

(पाठ्यक्रम के राग - यमन, बिलावल/अल्हैया बिलावल, भैरव एवं भूपाली)

अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए-

- बिलावल, भैरव एवं कल्याण थाटों में 15-15 अलंकारों का गायन।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए-

- बिलावल, भैरव एवं कल्याण थाटों में 15-15 अलंकारों का वादन।

(स) पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का ताली देकर प्रदर्शन -

- त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, रूपक एवं झपताल के ठेकों का ज्ञान एवं ठाह में हाथ से ताली देकर प्रदर्शन।

****

बी.पी.ए. द्वितीय वर्ष

(मुख्य विषय - गायन/ स्वर वाद्य)

कोर्स 1- संगीतशास्त्र

Course Code- BMV/BMS- 201

क्रेडिट-04
पूर्णांक : 100

बाह्य मूल्यांकन **- पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25**
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

इकाई 1- हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत पद्धति के शुद्ध-विकृत स्वरों का तुलनात्मक अध्ययन। पूर्वांग वादी-उत्तरांगवादी राग। वादी स्वर से राग गायन के समय का संबंध। संधिप्रकाष राग, अध्वदर्शक स्वर, परमेल प्रवेशक राग की जानकारी।

इकाई 2- स्वर अंतराल (Interval), टोन (मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन), स्केल (नेचरल स्केल, डायटोनिक स्केल, टेम्पर्ड स्केल), अनुनाद (Resonance), डोल, (Beat), प्रतिध्वनि (Echo) एवं उपस्वर अथवा स्वयंभू स्वर (Overtone) तथा प्रमुख स्वर संवादों का अध्ययन। तार की लम्बाई और ध्वनि की आवृत्ति का पारस्परिक सम्बन्ध।

इकाई 3- भारतीय एवं पाश्चात्य वाद्य वर्गीकरण का अध्ययन। वितत् वाद्य का स्पष्टीकरण। गायन के परीक्षार्थियों के लिए तानपूरा तथा वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए अपने-अपने वाद्य का संक्षिप्त ऐतिहासिक अध्ययन।

इकाई 4- ध्रुपद, धमार, तराना, चतुरंग गीत प्रकार एवं मसीतखानी गत का परिचय। छत्तीसगढ़ के जंवारा गीत, करमा गीत तथा ददरिया गीत का सामान्य परिचय |

इकाई 5- सदारंग-अदारंग, बैजू-बख्शू, गोपाल नायक, हद्दू-हस्सू खाँ, उ.अब्दुलकरीम खाँ, बाबा अलाउद्दीन खाँ, पं. पन्नालाल घोश का संक्षिप्त जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान। छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों– श्री झाड़ूराम देवांगन एवं सुरुजबाई खांडे का जीवन परिचय तथा लोकसंगीत के क्षेत्र में उनका योगदान |

संदर्भ ग्रन्थ :

1. संगीतांजलि भाग 3 - पं. ओमकारनाथ ठाकुर
2. राग परिचय भाग 2 ,3,4 - श्री हरीश चन्द्र श्रीवास्तव
3. सुबोध संगीत शास्त्र भाग 1-डॉ. तेज सिंह टांक

****

कोर्स 2 – क्रियात्मक सिद्धांत

Course Code- BMV/BMS- 202

क्रेडिट-04
पूर्णांक : 100
बाह्य मूल्यांकन - पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

इकाई 1- - पाठ्यक्रम के राग तोड़ी, भैरवी एवं काफी थाटों में अलंकारों का लेखन । पाठ्यक्रम के राग यमन, भैरव, भीमपलासी, बिहाग, बागेश्री, काफी, दुर्गा एवं भैरवी रागों का शास्त्रीय परिचय।

इकाई 2- पाठ्यक्रम के रागों में मध्यलय ख़्याल अथवा रज़ाखानी गत/द्रुतलय की रचनाओं का तीन-तीन तानों/तोड़ों सहित भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लेखन।

इकाई 3- मींड, कण, खटका मुर्की, आलाप, तान, सूत, घसीट, ज़मज़मा और तोड़ा की जानकारी। बोल-आलाप, बोलतान, कृन्तन, जोड़, झाला, की परिभाषा। तिहाई की परिभाषा एवं प्रकार अतीत-अनागत की जानकारी।

इकाई 4- त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, रूपक, तीव्रा, झपताल, सूलताल तथा चौताल के ठेकों का ज्ञान एवं ठाह, दुगुन एवं चौगुन में लेखन।

इकाई 5- लगभग 400 शब्दों में संगीत संबंधी किसी विषय पर निबंध लेखन।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2, 3 ,4– पं. विष्णु नारायण भातखंडे
2. राग परिचय भाग 1,2,3 - श्री हरीश चन्द्र श्रीवास्तव
3. राग रूपान्जली – डॉ. पुष्पा बसु
4. संगीत निबंध संग्रह – पं. हरीश चन्द्र श्रीवास्तव

****

कोर्स 3 – प्रायोगिक

Course Code- BMV/BMS- 203

क्रेडिट-08
पूर्णांक : 100
बाह्य मूल्यांकन - पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

(पाठ्यक्रम के राग - यमन, भैरव, भीमपलासी, बिहाग, बागेश्री, काफी, दुर्गा एवं भैरवी)

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए-

- पाठ्यक्रम के किन्हीं दो रागों में एक-एक विलम्बित ख़्याल आलाप तथा तानों सहित प्रदर्शन।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए -

- पाठ्यक्रम के किन्हीं दो रागों में एक-एक विलम्बित/मसीतखानी गत तानों/तोड़ों सहित प्रदर्शन।

****

कोर्स 4 – प्रायोगिक

Course Code- BMV/BMS- 204

क्रेडिट-08
पूर्णांक : 100
बाह्य मूल्यांकन - पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

(पाठ्यक्रम के राग- यमन, भैरव, भीमपलासी, बिहाग, बागेश्री, काफी, दुर्गा एवं भैरवी)

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए-

- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक-एक मध्यलय ख़्याल आलाप तथा तानों सहित।
- पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तराना।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए -

- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक-एक मध्यलय/द्रुतलय की रचना अथवा रज़ाखानी गत तानों/तोड़ों सहित।
- एक धुन।

(स) पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का ताली देकर ठाह एवं दुगुन में प्रदर्शन -

- त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, रूपक, तीव्रा, झपताल, सूलताल तथा चौताल के ठेकों का ज्ञान एवं ठाह/दुगुन में हाथ से ताली देकर प्रदर्शन।

****

बी.पी.ए. तृतीय वर्ष
(मुख्य विषय - गायन/ स्वर वाद्य)
कोर्स 1- संगीतशास्त्र
Course Code- BMV/BMS- 301

क्रेडिट-04
पूर्णांक : 100

बाह्य मूल्यांकन **- पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25**
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

इकाई 1- राग-रागिनी, थाट-राग तथा शुद्ध, छायालग और संकीर्ण राग वर्गीकरण का अध्ययन। पं. व्यंकटमखी के 72 मेल, उत्तर भारतीय संगीत में एक सप्तक से 32 थाटों की निर्माण विधि एवं एक थाट से 484 रागों की उत्पत्ति।

इकाई 2- घराने की परिभाषा एवं स्पष्टीकरण। ख्याल के ग्वालियर, आगरा, दिल्ली, पटियाला, किराना और जयपुर घरानों का सामान्य परिचय तथा सेनिया घराने की सामान्य जानकारी।

इकाई 3- आविर्भाव, तिरोभाव, नायकी, गायकी, तारपरन तथा लागडाट की परिभाषा। तान की परिभाषा एवं इसके प्रकार।

इकाई 4- गायक/वादक के गुण-दोष। छत्तीसगढ़ के पंडवानी, भरथरी तथा चंदैनी लोक गाथाओं का सामान्य परिचय |

इकाई 5- उ. फ़ैयाज़ ख़ाँ, उ. बड़े ग़ुलामअली ख़ाँ, पं. रविशंकर, उ. अलीअकबर ख़ाँ, उ. विलायत ख़ाँ, पं. वी.जी. जोग, उ. बिस्मिल्ला ख़ा, पं. हरिप्रसाद चौरसिया का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान। छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों – दाऊ महासिंह चन्द्राकर , श्री पूनाराम निषाद तथा श्री चिंतादास बंजारे का जीवन परिचय तथा लोकसंगीत के क्षेत्र में उनका योगदान |

संदर्भ ग्रन्थ :

1. संगीतांजलि भाग 3 - पं. ओमकारनाथ ठाकुर
2. राग परिचय भाग 3,4 - श्री हरीश चन्द्र श्रीवास्तव
3. सुबोध संगीत शास्त्र भाग 1-डॉ. तेज सिंह टांक

****

कोर्स 2 – क्रियात्मक सिद्धांत

Course Code- BMV/BMS- 302

क्रेडिट-04
पूर्णांक : 100

बाह्य मूल्यांकन **- पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25**
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

इकाई 1- पाठ्यक्रम के राग बिहाग, बागेश्री, मालकौंस, तोड़ी, आसावरी, मारवा, पूरिया, खमाज, देस एवं तिलककामोद रागों का सामान्य शास्त्रीय परिचय।

इकाई 2- पाठ्यक्रम के रागों में विलम्बितलय/मसीतखानी अथवा मध्यलय ख़्याल/रज़ाखानी गत रचनाओं का तीन-तीन तानों/तोड़ों सहित भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लेखन।

इकाई 3- आड़, कुआड़, बिआड़ लयों की जानकारी।

इकाई 4- त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाड़ा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आड़ाचौताल, दीपचंदी तथा झूमरा तालों का परिचय एवं उन्हें तिगुन, चौगुन में लिखने का अभ्यास।

इकाई 5- लगभग 500 शब्दों में संगीत संबंधी किसी विषय पर निबंध लेखन।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2, 3 ,4– पं. विष्णु नारायण भातखंडे
2. राग परिचय भाग 1,2,3 - श्री हरीश चन्द्र श्रीवास्तव
3. राग रूपान्जली – डॉ. पुष्पा बसु
4. संगीत निबंध संग्रह – पं. हरीश चन्द्र श्रीवास्तव

****

कोर्स 3 – प्रायोगिक

Course Code- BMV/BMS- 303

क्रेडिट-08
पूर्णांक : 100

बाह्य मूल्यांकन **- पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25**
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

(पाठ्यक्रम के राग - बिहाग, बागेश्री, मालकौंस, तोड़ी, आसावरी, मारवा, पूरिया, खमाज, देस एवं तिलककामोद)

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए-

- पाठ्यक्रम के किन्हीं तीन रागों में एक-एक विलम्बित ख़्याल आलाप तथा तानों सहित प्रदर्शन।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए -

- पाठ्यक्रम के किन्हीं तीन रागों में एक-एक विलम्बित/मसीतखानी गत तानों/तोड़ों सहित प्रदर्शन।

****

कोर्स 4 - प्रायोगिक

Course Code- BMV/BMS- 304

क्रेडिट-08
पूर्णांक : 100

बाह्य मूल्यांकन **- पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25**
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

(पाठ्यक्रम के राग - बिहाग, बागेश्री, मालकौंस, तोड़ी, आसावरी, मारवा, पूरिया, खमाज, देस एवं तिलककामोद)

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए-

- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक-एक मध्यलय ख़्याल आलाप तथा तानों सहित।
- पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद/ धमार का प्रदर्शन।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए -

- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक-एक मध्यलय/द्रुतलय की रचना अथवा रज़ाखानी गत तानों/तोड़ों सहित।
- तीनताल के अतिरिक्त किसी अन्य ताल में एक गत आलाप, तान/तोड़ों सहित।

(स) पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का ताली देकर ठाह, दुगुन एवं चौगुन में प्रदर्शन -

- त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाड़ा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आड़ाचौताल, दीपचंदी तथा झूमरा तालों का ज्ञान एवं ठाह, दुगुन एवं चौगुन में हाथ से ताली देकर प्रदर्शन

****

बी.पी.ए. चतुर्थ वर्ष
(मुख्य विषय - गायन/ स्वर वाद्य)
कोर्स 1- संगीतशास्त्र
Course Code- BMV/BMS- 401

क्रेडिट-04
पूर्णांक : 100

बाह्य मूल्यांकन **- पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25**
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

इकाई 1- गांधर्व गान, मार्ग-देशी एवं ग्राम-मूर्च्छना का प्रारंभिक परिचय । भरत का श्रुति-निदर्शन एवं शारंगदेव द्वारा उल्लिखित चतुःसारणा का परिचय। ग्राम राग आदि दशविध राग वर्गीकरण का अध्ययन। राग के ग्रह आदि दस लक्षण।

इकाई 2- निबद्ध और अनिबद्ध गान का सामान्य परिचय। अनिबद्ध के अंतर्गत रागालप्ति एवं रूपकालप्ति के भेद-प्रभेदों का अध्ययन। वाग्गेयकार की परिभाषा , गमक की परिभाषा और प्रकार (संगीतरत्नाकर के अनुसार)।

इकाई 3- पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर स्वरलिपि व तालिपि पद्धति का परिचय।

इकाई 4- स्टाफ नोटेशन (स्वरलिपि) पद्धति का सामान्य परिचय। पाठ्यक्रम के रागों के आरोह-अवरोह व पकड़ का इस पद्धति में लेखन। हार्मनी – मेलोडी का सामान्य परिचय।

इकाई 5- स्वर प्रस्तार, खण्डमेरु, नष्ट और उद्दिष्ट का सामान्य परिचय।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. संगीतांजलि भाग 4,5,6 - पं. ओमकारनाथ ठाकुर
2. संगीतमणि भाग 1,2 - डॉ महारानी शर्मा
3. सुबोध संगीत शास्त्र भाग 1-डॉ. तेज सिंह टांक

****

कोर्स 2 – क्रियात्मक सिद्धांत
Course Code- BMV/BMS- 402

क्रेडिट-04
पूर्णांक : 100

बाह्य मूल्यांकन **- पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25**
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

इकाई 1- पाठ्यक्रम के राग जौनपुरी, दरबारी कान्हड़ा, जैजैवन्ती, बृंदावनी सारंग, कामोद, हमीर, केदार, पूरिया धनाश्री, पटदीप एवं शंकरा रागों का सामान्य शास्त्रीय परिचय।

इकाई 2- पाठ्यक्रम के रागों में विलम्बितलय/मध्यलय ख़्याल अथवा मसीतखानी/रज़ाखानी गत की रचनाओं का तीन-तीन तानों/तोड़ों सहित भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लेखन।

इकाई 3- पाठ्यक्रम के रागों में तान व तिहाई की रचना।

इकाई 4- पाठ्यक्रम के ताल- तीनताल, एकताल, धमार, झपताल और रूपक ताल के ठेकों को आड़ (दो मात्रा में तीन मात्रा) की लयकारी को भातखण्डे ताल लिपि में लिखने का अभ्यास।

इकाई 5- लगभग 600 शब्दों में संगीत संबंधी किसी विषय पर निबंध लेखन।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2, 3 ,4– पं. विष्णु नारायण भातखंडे
2. राग परिचय भाग 2,3,4 - श्री हरीश चन्द्र श्रीवास्तव
3. राग रूपान्जली – डॉ. पुष्पा बसु
4. संगीत निबंध संग्रह – पं. हरीश चन्द्र श्रीवास्तव

****

कोर्स 3 - प्रायोगिक [मौखिक (Viva)]

Course Code- BMV/BMS- 403

क्रेडिट-08
पूर्णांक : 100
बाह्य मूल्यांकन - पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

(पाठ्यक्रम के राग - जौनपुरी, दरबारी कान्हड़ा, जैजैवन्ती, बृंदावनी सारंग, कामोद, हमीर, केदार, पूरिया धनाश्री, पटदीप एवं शंकरा)

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए-

- पाठ्यक्रम के किन्हीं चार रागों में एक-एक विलम्बित ख़्याल आलाप तथा तानों सहित प्रदर्शन।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए -

- पाठ्यक्रम के किन्हीं चार रागों में एक-एक विलम्बित/मसीतखानी गत तानों/तोड़ों सहित प्रदर्शन।
- तीनताल के अतिरिक्त किसी अन्य ताल में एक गत आलाप, तान/तोड़ों सहित।

****

कोर्स 4 - प्रायोगिक [मौखिक (Viva)]

Course Code- BMV/BMS- 404

क्रेडिट-08
पूर्णांक : 100
बाह्य मूल्यांकन - पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

(पाठ्यक्रम के राग - जौनपुरी, दरबारी कान्हड़ा, जैजैवन्ती, बृंदावनी सारंग, कामोद, हमीर, केदार, पूरिया धनाश्री, पटदीप एवं शंकरा)

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए-

- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक-एक मध्यलय ख़्याल आलाप तथा तानों सहित।
- पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद/ धमार का प्रदर्शन।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए -

- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक-एक मध्यलय/द्रुतलय की रचना अथवा रज़ाखानी गत तानों/तोड़ों सहित।
- तीनताल के अतिरिक्त किसी अन्य ताल में एक गत आलाप, तान/तोड़ों सहित।

(स) पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का ताली देकर ठाह, दुगुन, तिगुन एवं चौगुन में प्रदर्शन -

- त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाड़ा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आड़ाचौताल, दीपचंदी तथा झूमरा तालों का ज्ञान एवं ठाह, दुगुन, तिगुन एवं चौगुन में हाथ से ताली देकर प्रदर्शन।

****

कोर्स 5 - प्रायोगिक [मंच प्रदर्शन (Stag Performance)]

Course Code- BMV/BMS- 405

क्रेडिट-06
पूर्णांक : 100
बाह्य मूल्यांकन - पूर्णांक : 70, उत्तीर्णांक : 25
आंतरिक मूल्यांकन - पूर्णांक : 30, उत्तीर्णांक : 11

(पाठ्यक्रम के राग - जौनपुरी, दरबारी कान्हड़ा, जैजैवन्ती, बृंदावनी सारंग, कामोद, हमीर, केदार, पूरिया धनाश्री, पटदीप एवं शंकरा)

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए-

- पाठ्यक्रम में किसी एक राग में विलम्बित ख्याल एवं मध्यलय/द्रुतलय की रचना का विस्तृत आलाप, तान सहित मंचीय प्रदर्शन।
- किसी एक भजन का गायन।

(ब) वादन के परीक्षार्थियों के लिए-

- पाठ्यक्रम में किसी एक राग में विलम्बित ख्याल/मसीतखानी गत एवं मध्यलय/रज़ाखानी गत/द्रुतलय की रचना का विस्तृत आलाप, तोड़ों सहित मंचीय प्रदर्शन।
- किसी एक धुन का प्रदर्शन।

****

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
कला संकाय, आजीवन शिक्षा विभाग

बी.ए./बी.ए. ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय– .पर्यावरण अध्ययन

भाग अ : परिचय			
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बी.ए./बीपीए/बी.एफ.ए./बी.वोक) प्रमाणपत्र/डिग्री/ऑनर्स		द्वितीय सेमेस्टर	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	**ALLAEC-01**	
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	पर्यावरण अध्ययन	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	**AEC**	
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुसार	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	पर्यावरण अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है कि अध्येता पर्यावरण का आशय जानने के साथ उसके महत्व को समझे। पर्यावरण क्या है ? जीवन में उसकी आवश्यकता क्यों होती है ? उसका स्वरूप कैसा है ? पर्यावरण संरक्षण क्यों आवश्यक है ? पर्यावरण प्रदूषण क्या है ? उसके रूपों को जानना और उससे बचाव के उपाय क्या–क्या हैं ? जैसे पक्षों से परिचित होना है।	
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	पर्यावरण के अध्ययन से विद्यार्थी अपने आस–पास के जलवायु आदि की शुद्धता के लिए सजग होता है। इसके कारण मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का महत्व स्पष्ट होता है। विद्यार्थी अपने पर्यावरण की शुद्धता और संरक्षण का समुचित ध्यान रखता है।	
7.	क्रेडिटमान	02 क्रेडिट	1 क्रेडिट=15 घंटे
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई: 12)

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु			
व्याख्यान–शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 30 अवधियाँ (30 घंटे)			
इकाई	इकाई का नाम	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	पर्यावरण अध्ययन का बहुविषयी या बहुआयामी स्वभाव, प्राकृतिक संसाधन तथा इससे सम्बन्धित समस्याएं	1. परिभाषा, कार्य क्षेत्र एवं महत्व Definition, Scope and importance 2. जन जागरण/चेतना की आवश्यकता Need for public awareness 3. प्राकृतिक संसाधन Natural resources 4. नवीनीकृत एवं अनवीनीकृत संसाधन Renevable and non renevable resources प्राकृतिक संसाधन एवं उससे सम्बन्धित समस्यायें Natural resources and associated problems	30 घंटे

		5. वन संसाधन – उपयोग एवं अतिदोहन, वनोन्मूलन, केस स्टडी (प्रकरण अध्ययन), काष्ठ कटाई, खनन, बांध एवं वनों तथा जनजातियों पर इनका प्रभाव । Forest resources : Use and over-exploitation, deforestation, case studies, Timber extraction, mining, dams and their effects on forests and tribal people. 6. जल संसाधन – सतही एवं भूमिगत जल का उपयोग एवं अति उपयोग, बाढ़, सूखा, जल के लिये संघर्ष, बांध–लाभ एवं समस्यायें । Water resources : Use and over-utilization of surface and ground water, floods, Drought, conflicts over water, dams-benefits and problems. 7. खनिज संसाधन – उपयोग एवं अतिदोहन, खनिज संसाधनों के खनन एवं उपयोग का पर्यावरण पर प्रभाव, प्रकरण अध्ययन । Mineral resources : Use and exploitation, environmental effects of extracting and using mineral resources, case studies. 8- खाद्य संसाधन – विश्व की खाद्य समस्या, कृषि एवं अतिचारण के कारण होने वाले परिवर्तन, आधुनिक कृषि के प्रभाव, उर्वरक– कीटनाशी की समस्या, जलभरण, लवणता, प्रकरण अध्ययन । Food resources : World food problems, changes caused by agriculture and overgrazing, effects of modern agriculture, fertilizer-pesticide problems, water logging, salinity, case studies. 9. ऊर्जा संसाधन – ऊर्जा की बढ़ती हुई आवश्यकता, नवीनीकृत एवं अनवीनीकृत ऊर्जा स्त्रोत, ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोतों का उपयोग, प्रकरण अध्ययन । Energy resources : Growing energy needs, renewable and non renewable energy resources, use of alternate energy sources, case studies. 10. भूमि संसाधन – भूमि एक संसाधन के रूप में, भूमि अपक्षय, मानव प्रेरित भूस्खलन, मृदा	

		अपरदन एवं मरूस्थलीकरण । Land resources : Land as a resource, land degradation, man induced landslide, soil erosion and desertification. 11. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में व्यक्ति की भूमिका । Role of an individual in conservation of natural resources. 12. सुविधापूर्ण जीवन पद्धतियों के संरक्षण में व्यक्ति की भूमिका । Equitable use of resources for sustainable lifestyles.	
द्वितीय	पारिस्थितिक तंत्र	1. पारिस्थितिक तंत्र की परिकल्पना Concept of an ecosystem 2. पारिस्थितिक तंत्र की संरचना एवं कार्य Structure and function of an ecosystem. 3. उत्पादक, उपभोक्ता एवं अपघटनकर्ता Producers, consumers and decomposers 4. पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा प्रवाह Energy flow in the ecosystem 5. पारिस्थितिक अनुक्रमण Ecological Succession 6. खाद्य श्रृंखला, खाद्य जाल एवं पारिस्थितिक पिरामिड Food chains, food web and ecological pyramids. 7. पारिस्थितिक तंत्र की प्रस्तावना, प्रकार, लक्षण एवं कार्य – Introduction, types, characteristic feachers, structure and function of the following ecosystem : (a) वन का पारिस्थितिक तंत्र Forest ecosystem (b) घास के मैदान का पारिस्थितिक तंत्र Grassland ecosystem (c) मरुस्थल का पारिस्थितिक तंत्र Desert ecosystem (d) जलीय पारिस्थितिक तंत्र (तालाब, जलधारा, झील, महासागर एवं दलदली	

		भूमि का पारिस्थितिक तंत्र) Aquatic ecosystems (ponds, streams, lakes, rivers, oceans, estuaries)	
तृतीय	जैव विविधता, उसके हॉटस्पॉट, जैव विविधता के कारण एवं उसका संरक्षण	1. सामान्य परिचय – परिभाषा, अनुवांशिक प्रजाति एवं पारिस्थितिक तंत्रीय विविधता । Introduction- Definition : genetic, species and ecosystem diversity 2. भारत वर्ष का जैव भौगोलिक वर्गीकरण Biogeographical classification of India 3. जैव विविधता का महत्व–क्षयशील उपयोग, उत्पादन उपयोग, सामाजिक, एथिकल, एस्थेटिक एवं ऐच्छिक महत्व । Value of biodiversity : consumptive use, productive use, social, ethical, aesthetic and option values. 4. विश्व, राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर जैव विविधता Biodiversity at global, National and Local levels. 5. भारत वर्ष एक वृहत् विविधता वाले राष्ट्र के रूप में India as a mega-diversity nation. 6- जैव विविधता के हॉट स्पॉट Hot-spots of biodiversity. 7- खतरनाक स्थिति : जैव विविधता के लिए – आवास का नष्ट होना, वन्य जीवनों का शिकार, मानव एवं वन्य जन्तु संघर्ष । Threats to biodiversity : habitat loss, poaching of wildlife, man and wildlife conflicts. 8. भारतवर्ष की संकटग्रस्त एवं विशेष क्षेत्रीय जातियां Endangeres and endemic species of India 9. जैव विविधता का संरक्षण – इन–सिटू एवं एक्स–सिटू संरक्षण Conservation of biodiversity : In-situ and ex-situ conservation of biodiversity.	

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
(छत्तीसगढ़)

लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पाठ्यक्रम

बी.पी.ए. (Bachelor of Performing Arts)

प्रथम सेमेस्टर, द्वितीय सेमेस्टर एवं तृतीय सेमेस्टर हेतु

विषय - लोकसंगीत (GE)

W.e.f. 2025-26

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग
बीपीए/बीपीए ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय –लोक संगीत (सेमेस्टर प्रथम/द्वितीय/तृतीय)

भाग अ : परिचय				
कार्यक्रम : बीपीए/बीए/बीएफए/बीवोक प्रमाणपत्र/डिप्लोमा			सेमेस्टर (प्रथम/द्वितीय/तृतीय)	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रमकोड	FLSGE01		
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	लोक संगीत का परिचय		
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	जीई		
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुरूप		
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	विद्यार्थी छत्तीसगढी सांस्कृतिक परिदृश्य से परिचित हो सकेगें।		
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	छत्तीसगढ़ के लोकगीत सीख सकेंगे छत्तीसगढ़ के लोकनृत्य सीख सकेंगे छत्तीसगढ़ के लोकगाथा सीख सकेंगे		
7.	क्रेडिटमान	03 क्रेडिट	1 क्रेडिट =15 घंटे	
8.	कुलअंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई : 12)	

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु

व्याख्यान–शिक्षण अवधियों की कुलसंख्या =45 अवधियाँ (45 घंटे)

इकाई	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	छत्तीसगढ़ी लोक गीत – सोहर, बधाई	15
द्वितीय	छत्तीसगढ़ का लोक नृत्य – सुवा, राऊत	15
तृतीय	छत्तीसगढ़ी लोक गाथा – भरथरी	15

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोक संगीत

भाग स : सीखने के संसाधन			
सीखने के संसाधन–पाठ्य पुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, ऑनलाइन संसाधन और अन्य			
संदर्भ ग्रंथ सूची – 1. प्रो. शरीफ मोहम्मद, मध्यप्रदेश का लोक संगीत 2. श्री रामकृष्ण तिवारी, छत्तीसगढ़ का लोक संगीत 3. डॉ. पीसी लाल यादव, छत्तीसगढ़ी लोकगाथा एक अभिव्यक्ति 4. डॉ. दीपशिखा पटेल, अंगराग का लोकतत्व			
भाग द : आँकलन एवं मूल्यांकन			
प्रस्तावित सतत मूल्यांकन विधियाँ :			
अधिकतम अंक :	100	न्यूनतम अंक	40
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	30	न्यूनतम अंक	12
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	70	न्यूनतम अंक	28
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	विषय के अनुसार आंतरिक परीक्षा का आयोजन। (सैद्धांतिक और तकनीकी ज्ञान एवं प्रस्तुति)		
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	तीन खंड : खंड अ –वस्तुनिष्ठ प्रश्न। खंड ब –लघु उत्तरीय प्रश्न। खंड स –दीर्घ उत्तरीय प्रश्न।		

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोक संगीत विभाग

Indira Kala Sangit Vishwavidyalaya, Khairagarh, CG

GE, SEC, VAC Courses according to NEP 2020

(Common for BPA, BFA, B. Voc and B.A. Programs)

- The students should choose any one of the following courses as per the choices given in the concerned semester as GE, SEC, VAC.
- The courses once completed shall not be repeated.
- The GE courses must be different from the DSC and DSE subjects.

GE of 03 Credits offered in Semesters I/II/III				
Sl. No.	Course Title	Course Code	Faculty	Department
1.	Introductory Study of Hindustani Vocal Music	MHVGE01	Music	Hindustani Vocal
2.	Introductory Study of Light Music	MLMGE01	Music	Hindustani Vocal
3.	Introductory Study of Sarod	MSDGE01	Music	Instrumental Music
4.	Introductory Study of Sitar	MSRGE01	Music	Instrumental Music
5.	Introductory Study of Violin	MVNGE01	Music	Instrumental Music
6.	Introductory Study of Tabla	MTLGE01	Music	Percussion Instruments
7.	Introduction of Sound Recording	MPSGE01	Music	Physics of Sound
8.	Introduction to Kathak	DKTGE01	Dance	Kathak
9.	Introduction to Bharatanatyam	DBNGE01	Dance	Bharatanatyam
10.	Introduction to Odissi	DODGE01	Dance	Odissi
11.	Lok Sangeet Ka Parichaya	FLSGE01	Folk	Folk Music & Dance
12.	Natyakala: Samanya Parichaya	ATR1GE-01	Art	Theatre
13.	Sanskrit Sahitya: Samanya Adhyayan	ASANGE-01	Art	Sanskrit
14.	Hindi Sahitya: Samanya Parichay	AHINGE-01	Art	Hindi
15.	Introduction to English Literature	AENGE-01	Art	English
16.	Yatra Evam Paryatan: Samanya Adhyayan	AAIHGE-01	Art	History
17.	Computer Study for Best Performance	ACOMPGE-01	Art	Computer Centre
18.	Introduction: The Philosophy of Yoga	AYCGE-01	Art	Yoga Kendra
19.	Visual Art Appreciation	VHGE-T	Visual Arts	History of Art

20.	Greeting Card Making	VPGE-P	Visual Arts	Painting
21.	Introduction to Clay and Pottery	VSGE-P	Visual Arts	Sculpture
22.	Introduction of Print Making	VGGE-P	Visual Arts	Graphics
23.	Embroidery and Applique Techniques	VCDGE-01	Visual Arts	Design

SEC of 03 Credits offered in Semesters I/II/IV				
Sl. No.	Course Title	Course Code	Faculty	Department
1.	Fundamentals of Hindustani Classical Vocal	MUSSEC01	Music	Hindustani Vocal
2.	Fundamentals of Light Music	MUSSEC02	Music	Hindustani Vocal
3.	Sarod Craft and Care: From Origin to Innovation	MUSSEC03	Music	Instrumental Music
4.	Sitar Craft and Care: From Origin to Innovation	MUSSEC04	Music	Instrumental Music
5.	Violin Craft and Care: From Origin to Innovation	MUSSEC05	Music	Instrumental Music
6.	Fundamentals of Tabla	MUSSEC06	Music	Percussion Instruments
7.	General Study of the Working Methods of Various Sound Recording Software	MUSSEC07	Music	Physics of Sound
8.	Aaharya of Kathak	DNCSEC01	Dance	Kathak
9.	Aaharya of Bharatanatyam	DNCSEC02	Dance	Bharatanatyam
10.	Aaharya of Odissi	DNCSEC03	Dance	Odissi
11.	Chhattisgarhi Lok ka Aaharya	FOMSEC01	Folk	Folk Dance & Music
12.	Rangamanch Rachana Kaushal	ATR1SEC-01	Art	Theatre
13.	Sanskrit Samvad Kaushal	ASANSEC-01	Art	Sanskrit
14.	Prayojanmulak Hindi	AHINSEC-01	Art	Hindi
15.	Communication Skill in English	AENGSEC-01	Art	English
16.	Pratima Vigyan Kaushal	AAIHSEC-01	Art	History
17.	Graphics & Web Designer Assistant	ACOMPSEC-01	Art	Computer Centre
18.	General Study of Yoga	AYCSEC-01	Art	Yoga Kendra
19.	Introduction to Indian Miniature Art	VHSEC-P	Visual Arts	History of Art

20.	Collage Painting	VPSEC-P	Visual Arts	Painting
21.	Paper Mache Art	VSSEC-P	Visual Arts	Sculpture
22.	Elementary Print Making	VGSEC-P	Visual Arts	Graphics
23.	Tie and Dye Techniques	VCDSEC-01	Visual Arts	Design

VAC of 02 Credits offered in Semesters III/IV/V			
Sl. No.	Course Title	Course Code	Faculty
1.	General Introduction to Voice Culture	MUSVAC01	Music
2.	General Introduction of Indian String Instruments	MUSVAC02	Music
3.	General Introduction to Indian Percussion Instruments	MUSVAC03	Music
4.	General Study of Stage Equipment and Sound Design in Musical Production	MUSVAC04	Music
5.	Classical Dances of South India	DNCVAC01	Dance
6.	Classical Dances of North India	DNCVAC02	Dance
7.	Aaharya of South Indian Classical Dances	DNCVAC03	Dance
8.	Aaharya of North Indian Classical Dances	DNCVAC04	Dance
9.	Chhattisgarh ke Lok Vadya	FOMVAC01	Folk
10.	Natak Aur Janjagaran	ATR1VAC-01	Art
11.	Sanskrit me Sanskar Parampara	ASANVAC-01	Art
12.	Bharatiya Gyan Parampara	AHINVAC-01	Art
13.	Indian Knowledge System	AENGVAC-01	Art
14.	Pracheen Bharat me Shikshan Vyavastha	AAIHVAC-01	Art
15.	Cyber Security	ACOMPVAC-01	Art
16.	Yoga Philosophy: Indian Knowledge System	AYCVAC-01	Art
17.	Rashtriya Seva Yojana	ALLVAC-01	Art
18.	Art Review	VHVAC-T	Visual Arts

19.	Introduction to Traditional Indian Textiles	VCDVAC-01	Visual Arts

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
कला संकाय, हिन्दी विभाग
बी.ए./बी.पी.ए./बी.एफ.ए./बी.वोक. ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय– हिन्दी भाषा (सेमेस्टर प्रथम)

<table>
<tr><td colspan="4">भाग अ : परिचय</td></tr>
<tr><td colspan="2">कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बी.ए./बीपीए/बी.एफ.ए./बी.वोक) डिग्री/ऑनर्स</td><td>सेमेस्टर प्रथम</td><td>सत्र : 2025 – 2026</td></tr>
<tr><td>1.</td><td>पाठ्यक्रम कोड</td><td colspan="2">AHINAEC - 01</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>पाठ्यक्रम शीर्षक</td><td colspan="2">हिन्दी भाषा</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>पाठ्यक्रम का प्रकार</td><td colspan="2">AEC</td></tr>
<tr><td>4.</td><td>पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)</td><td colspan="2">कार्यक्रम के अनुसार</td></tr>
<tr><td>5.</td><td>पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य</td><td colspan="2">वर्तमान में हिन्दी भाषा आधे से अधिक भारतीयों की सम्पर्क भाषा है। वह हिन्दी–भाषी राज्यों में मातृभाषा है तो समग्र भारत की राजभाषा भी है। यदि वह राष्ट्रभाषा के रूप में भारतीय जन–मन का सच्चा प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करती है, तो विदेशों में वह भारतीय संस्कृति की सच्ची प्रसारिका भी है। उसे जानना–समझना, बोलना–लिखना, उसके प्रयोग में पारंगत होना विद्यार्थी के लिए न केवल व्यक्तित्त्व विकास के स्तर पर उपयोगी है, वरन् उसे कार्यक्षेत्र में स्थापित होने के लिए एक मजबूत आधार देने वाला भी है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हिन्दी भाषा की पाठ्यसामग्री और उसके व्याकरणिक रूप तथा जीवन के शासकीय, औद्योगिक, व्यावसायिक आदि क्षेत्रों में उसके व्यावहारिक प्रयोग को पाठ्यक्रम में रखा गया है। यह ज्ञान निश्चय ही विद्यार्थी को सही समझ और दिशा प्रदान करेगा।</td></tr>
<tr><td>6.</td><td>पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)</td><td colspan="2">1. विद्यार्थी हिन्दी भाषा एवं व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान से समृद्ध होंगे।
2. कविता, कहानी एवं संस्मरण विधा से परिचित होंगे।
3. भाषण कला एवं रचनात्मक लेखन में दक्ष होंगे।
4. रचनात्मक लेखन एवं संभाषण कौशल से विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास हो सकेगा।</td></tr>
<tr><td>7.</td><td>क्रेडिटमान</td><td>02 क्रेडिट</td><td>1 क्रेडिट=15 घंटे</td></tr>
<tr><td>8.</td><td>कुल अंक</td><td>अधिकतम अंक : 100
(एसईईः 70, सीसीई : 30)</td><td>न्यूनतमअंक : 40
(एसईई : 28, सीसीईः 12)</td></tr>
</table>

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु			
व्याख्यान–शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 30 अवधियाँ (30 घंटे)			
इकाई	इकाई का नाम	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या / घण्टे
प्रथम		1. पुष्प की अभिलाषा (कविता) – माखनलाल चतुर्वेदी 2. शिरीष के फूल (निबन्ध) – आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी 3. एक टोकरी भर मिट्टी (कहानी) – माधवराव सप्रे 4. चीनी भाई (संस्मरण) – महादेवी वर्मा 5. कूर्मांचल में कुछ दिन (यात्रा वृत्त) –धर्मवीर भारती	30 घंटे
द्वितीय	भाष : सम्प्रेषण कौशल एवं संभाषण कौशल	• भाषा की परिभाषा, प्रकृति, विविध रूप। • संप्रेषण की अवधारणा और महत्व, संप्रेषण के प्रकार, संप्रेषण के माध्यम, संप्रेषण की तकनीक, अध्ययन, वाचन एवं चर्चा : प्रक्रिया एवं बोध, साक्षात्कार, भाषण कला का परिचय एवं रचनात्मक लेखन। • संभाषण का अर्थ, उपादान विविध रूप तथा उपयोगिता। प्रयोगगत उदाहरण के तहत उद्घोषणा कला, आँखों देखा हाल, संचालन, समाचार वाचन, वाद–विवाद गतिविधि का परिचय एवं रचनात्मक लेखन।	
तृतीय	हिन्दी भाषा : वर्ण व्यवस्था, व्याकरण, मानक रूप, शब्द रचना, देवनागरी लिपि आदि प्रयोगगत प्रमुख रूप–	• स्वर एवं व्यंजन वर्णों का उच्चारण एवं लेखनगत सामान्य परिचय। • संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं अवयय एवं उनके भेदों का सोदाहरण परिचय। • उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि, समास और संक्षिप्ति एवं उनके भेदों का सोदाहरण सहित परिचय। • मानक भाषा, मानक हिन्दी भाषा के लक्षण एवं उदाहरण वर्तनी से आशय, शब्द शुद्धि, वाक्य शुद्धि। • पर्यायवाची, विलोम, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, समश्रुत शब्द सोदाहरण परिचय। मुहावरे, लोकोक्ति, संक्षेपण, पल्लवन का परिचय उदाहरण सहित। • लिपि का अर्थ, स्वरूप, देवनागरी लिपि का परिचय, नामकरण सम्बन्धी विविध मत, विशेषताएँ।	

भाग स : सीखने के संसाधन			
सीखने के संसाधन–पाठ्य पुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, ऑनलाइन संसाधन और अन्य			
पुस्तकें : 1– हिन्दी व्याकरण – कामता प्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन– इलाहाबाद, द्वितीय सं. 2009, मू. 125/– 2– हिन्दी व्याकरण के नवीन क्षितिज– डॉ. रवीन्द्र कुमार पाठक, भारतीय ज्ञानपीठ– नई दिल्ली, सं. 2000, मू. 450/– 3– हिन्दी व्याकरण (रस, छन्द, अलंकार सहित)– डॉ. उमेशचन्द्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2011, मू. 95/– 4– बोलने की कला– डॉ. भानुशंकर मेहता– विश्वविद्यालय प्रकाशन– वाराणसी 5– साक्षात्कार : कैसे हों तैयार – शहरोज, राजकमल पेपर बैक्स– नई दिल्ली, दूसरा सं. 2016, मू. 80/– 6– अच्छा वक्ता कैसे बनें – शिवप्रसाद बागड़ी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि.– नई दिल्ली, आठवाँ सं. 2016, मू. 80/– 7– हिन्दी भाषा संरचना – प्रधान सं. त्रिभुवन नाथ शुक्ल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी– भोपाल, प्रथम सं. 2008, मू. 30/–			
भाग द : आकलन एवं मूल्यांकन			
प्रस्तावित सतत मूल्यांकन विधियाँ :			
अधिकतम अंक :	100	न्यूनतम अंक	40
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	30	न्यूनतम अंक	12
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	70	न्यूनतम अंक	28
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	विषय के अनुसार आंतरिक परीक्षा का आयोजन। (सैद्धांतिक और तकनीकी ज्ञान एवं प्रस्तुति)		
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	तीन खंड : खंड अ –वस्तुनिष्ठ प्रश्न। खंड ब –लघुउत्तरीय प्रश्न। खंड स –दीर्घउत्तरीय प्रश्न।		

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़

कला संकाय, हिन्दी विभाग

बी.ए./बी.पी.ए. ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)

विषय– हिन्दी साहित्य (सेमेस्टर प्रथम)

भाग अ : परिचय			
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बी.ए./बीपीए) डिग्री/ऑनर्स		सेमेस्टर प्रथम	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	**AHINDSC-01**	
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	DSC	
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुसार	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	हिन्दी भाषा का इतिहास जितना प्राचीन है, उतना ही गूढ़–गहन भी। हिन्दी भाषा लगभग डेढ़ हजार वर्ष से देश के मध्य भाग के जन समाज की संस्कृति की वाहिका रही है। आज तो वह जनमन द्वारा राष्ट्रभाषा एवं सम्पर्क भाषा तथा संविधान द्वारा राजभाषा का दायित्त्व भी वहन कर रही है। यहाँ तक कि अपनी विशिष्ट क्षमताओं के कारण अन्तरराष्ट्रीय भाषा की परिधि तक जा पहुँची है। उसका अध्ययन विशेष लाभप्रद होगा।	
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	1. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के उद्भव विकास सम्बन्धी ज्ञान से अवगत हो सकेंगे। 2. विद्यार्थी भाषा के विविध रूपों को समझ सकेंगे। 3. हिन्दी के शब्द भंडार से परिचित होंगे। 4. हिन्दी व्याकरण और व्याकरणाचार्यों से अवगत होंगे।	
7.	क्रेडिटमान	06 क्रेडिट	1 क्रेडिट=15 घंटे
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई: 12)

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु			
व्याख्यान–शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 45 अवधियाँ (90 घंटे)			
इकाई	इकाई का नाम	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	हिन्दी' शब्द की व्युत्पत्ति एवं हिन्दी भाषा का उद्भव एवं विकास	हिन्दी' शब्द की व्युत्पत्ति, भाषा के रूप में हिन्दी शब्द का प्रयोग, हिन्दी का प्रारम्भिक स्वरूप, हिन्दी भाषा का विकास : 'हिन्दी' के एक भाषा–परम्परा के रूप में परिचय सहित, हिन्दी की मूल आकार भाषाओं का सामान्य परिचय।	90 घंटे
द्वितीय	हिन्दी भाषा के विविध रूप	हिन्दी भाषा के विविध रूप : बोलचाल की भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, संचार भाषा, रचनात्मक भाषा, विविध भाषारूपों का क्षेत्र, स्वरूप एवं विशेषताएँ।	
तृतीय	हिन्दी का शब्द भण्डार	हिन्दी का शब्द भण्डार : तत्सम, तद्भव, देशज और आगत शब्दों से आशय एवं उदाहरण।	

चतुर्थ	व्याकरण का अर्थ, परिभाषा, हिन्दी एवं व्याकरण	व्याकरण का अर्थ, परिभाषा, हिन्दी व्याकरण का संक्षिप्त परिचय। हिन्दी के व्याकरण–निर्माण में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान। हिन्दी के प्रारम्भिक व्याकरणाचार्य श्री कामता प्रसाद गुरु एवं किशोरीदास बाजपेयी का योगदान।	

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
कला संकाय, हिन्दी विभाग

बी.ए./बी.ए. ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय– हिन्दी साहित्य (सेमेस्टर द्वितीय)

भाग अ : परिचय			
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बी.ए./बीपीए) डिग्री/ऑनर्स		सेमेस्टर द्वितीय	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	**AHINDSC-02**	
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	हिन्दी साहित्य का इतिहास	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	DSC	
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुसार	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	हिन्दी साहित्य न केवल देश के बड़े भू–भाग के जनसमाज को प्रतिबिम्बित करता है, वरन लगभग डेढ़ हजार वर्ष से अब तक की भारतीय संस्कृति का परिचायक भी है, इसलिए उसका अध्ययन विद्यार्थी के लिए महत्त्वपूर्ण होगा।	
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	1. विद्यार्थी साहित्येतिहास काल विभाजन एवं नामकरण सम्बन्धी ज्ञान से अवगत हो सकेंगे। 2. युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर साहित्य और समाज के अर्न्तसंबंधों को समझ पाने में सक्षम हो सकेंगे। 3. आदिकाल से आधुनिकक काल तक के रचनाकारों और उसके विविध विषयों पर विश्लेष्णात्मक विचारशीलता का विकास हो सकेगा। 4. हिन्दी गद्य के अविभाव के पमुख कारणों एवं परिस्थितियों को समझ सकेंगे।	
7.	क्रेडिटमान	06 क्रेडिट	1 क्रेडिट=15 घंटे
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई: 12)
भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु			
व्याख्यान–शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 90 अवधियाँ (90 घंटे)			
इकाई	इकाई का नाम	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे

प्रथम	साहित्य लेखन की परम्परा	साहित्य लेखन की परम्परा, कालविभाजन एवं नामकरण, आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि तथा उसकी विभिन्न धाराओं– सिद्ध, नाथ, जैन, रासो, अपभ्रंश एवं लौकिक का सामान्य परिचय, आदिकालीन काव्य की विशेषताएँ।	90 घंटे

द्वितीय	पूर्वमध्यकाल/भक्तिकाल की पृष्ठभूमि	पूर्वमध्यकाल/भक्तिकाल की पृष्ठभूमि, भक्ति आन्दोलन, भक्तिकालीन काव्य की विभिन्न धाराओं– निर्गुण एवं सगुण, निर्गुण की दो शाखाओं– ज्ञानाश्रयी/संत मत तथा प्रेमाश्रयी/सूफीमत और सगुण की दो शाखाओं– कृष्णभक्ति और रामभक्ति का सामान्य परिचय/भक्तिकाल की विशेषताएँ।	
तृतीय	उत्तरमध्यकाल/रीतिकाल की पृष्ठभूमि	उत्तरमध्यकाल/रीतिकाल की पृष्ठभूमि, रीतिकालीन काव्य की विभिन्न धाराओं– रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त का सामान्य परिचय, रीतिकालीन काव्य की विशेषताएँ।	
चतुर्थ	आधुनिक काल/गद्यकाल की पृष्ठभूमि	आधुनिक काल/गद्यकाल की पृष्ठभूमि, 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनके युग के हिन्दी साहित्यगत विकास का सामान्य परिचय एवं विशेषताएँ, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके युग के साहित्यगत विकास का सामान्य परिचय एवं विशेषताएँ। छायावादी एवं छायावादोत्तर हिन्दी काव्य का सामान्य परिचय एवं विशेषताएँ। भारतेन्दु, द्विवेदी और प्रेमचन्दयुगीन, प्रेमचन्दोत्तर एवं समकालीन हिन्दी गद्य विधाओं का सामान्य परिचय एवं विशेषताएँ।	

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़

कला संकाय, हिन्दी विभाग

बी.ए./बी.पी.ए./बी.एफ.ए./बी.वोक ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)

विषय– प्रयोजनमूलक हिन्दी (सेमेस्टर द्वितीय)

भाग अ : परिचय			
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बी.ए., बीपीए) डिग्री/ऑनर्स		प्रथम/द्वितीय/चतुर्थ सेमेस्टर	सत्र : 2025 – 2026
9.	पाठ्यक्रम कोड	**AHINSEC-01**	
10.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रयोजनमूलक हिन्दी	
11.	पाठ्यक्रम का प्रकार	SEC	
12.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुसार	
13.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	वर्तमान में रोजगारोन्मुख पाठ्यविषय एवं पाठ्यक्रम को प्रमुखता दी जा रही है। विद्यार्थी अध्ययन उपरान्त यथाशीघ्र आत्मनिर्भर बनें, यही उद्देश्य प्रधान हो गया है। 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' विषय के तो नाम में ही अन्तर्निहित है प्रयोजन अर्थात उद्देश्यपरकता। इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम हिन्दी भाषा और उसके व्याकरण तक सीमित न होकर प्रत्यक्ष विविध कर्मक्षेत्रों जैसे व्यावसायिक, प्रौद्योगिक, पत्रकारिता, विज्ञापन–लेखन आदि में सक्षम बनाने वाला होता है। एक वैकल्पिक प्रश्नपत्र के रूप में इसका अध्ययन विद्यार्थी की कर्मक्षेत्र सम्बन्धी कार्यक्षमता को निश्चय ही बढ़ायेगा। इस पाठ्यक्रम में आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत क्षेत्रीय भ्रमण एवं प्रायोगिक कार्य को सम्मिलित किया जायेगा।	
14.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	1. विद्यार्थी हिन्दी की संविधानिक स्थिति से परिचित हो सकेंगे। 2. व्यवहारिक और कार्यालयीन पक्षों से परिचित हो सकेंगे। 3. अनुवाद की प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे। 4. विद्यार्थी संचार के विविध माध्यमों से अवगत होंगे।	
15.	क्रेडिटमान	03 क्रेडिट	1 क्रेडिट=15 घंटे
16.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई: 12)

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु			
व्याख्यान–शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 45 अवधियाँ (45 घंटे)			
इकाई	इकाई का नाम	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	राजभाषा हिन्दी : संवैधानिक स्थिति और गति, प्रयोजनमूलक हिन्दी और उसके व्यवहार क्षेत्र	पृष्ठभूमि : सामान्य हिन्दी का स्वरूप, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति : अनुच्छेद 343 से 351के तहत, संविधान स्वीकृत भाषा–नीति, राजभाषा आयोग (सन 1955), संसदीय राजभाषा समिति–सन् 1957,	45 घंटे

		राजभाषा अधिनियम – सन् 1963, अधिनियम के प्रमुख उपबंध, राजभाषा (संशोधन) अधिनियम– सन् 1967, सन् 1976 प्रयोजनमूलक हिन्दी : आशय एवं महत्ता, स्वरूप और व्यवहार क्षेत्र– कार्यालयी, शासकीय अनुवाद, व्यावसायिक और जनसंचार	
द्वितीय	अनुवाद : सामान्य सिद्धान्त, समस्याएँ, समाधान एवं अन्य आवश्यक पक्ष, प्रशासकीय पत्राचार के विविध रूप	अनुवाद की प्रक्रिया, अनुवाद के प्रकार, अनुवाद का महत्व, साहित्यिक अनुवाद, साहित्येतर अनुवाद, अनुवाद की समस्याएँ एवं समाधान, सूचना प्रधान साहित्य अथवा कार्यालयी अनुवाद, कम्प्यूटर एवं राजभाषा हिन्दी। सामान्य कार्यालयी पत्र, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश, परिपत्र, अर्द्ध सरकारी/अर्द्ध शासकीय पत्र, अनौपचारिक निर्देश, टिप्पणी, अनुस्मारक पत्र, पृष्ठांकन, शासकीय संकल्प/प्रस्ताव, अधिसूचना, प्रेस विज्ञप्ति/प्रेस टिप्पणी, तार	
तृतीय	जनसंचार के माध्यम : मीडिया और हिन्दी, विज्ञापन और हिन्दी	(क) जनसंचार – स्वरूप व महत्त्व और विभिन्न माध्यमों का परिचय (ख) श्रव्यमाध्यम लेखन – स्वरूप और विशेषताएँ, समाचार लेखन, रेडियो नाटक, उद्घोषणा, फीचर लेखन (ग) दृश्यमाध्यम लेखन – स्वरूप और विशेषताएँ, पटकथा लेखन, टेली ड्रामा, डाक्यूमेंट्री, संवाद लेखन, साहित्यिक विधाओं का रूपांतरण (घ) विज्ञापन हेतु लेखन – विज्ञापन में शब्द की भूमिका, विज्ञापन कला और साहित्य, शब्द और भावबोध, माध्यम परिवर्तन : शब्द और भावबोध, दृश्य–श्रव्य माध्यमों में विज्ञापन, विज्ञापन की भाषा के रूप में हिन्दी	

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़

कला संकाय, हिन्दी विभाग

बी.ए./बी.पी.ए./बी.एफ.ए. ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)

विषय– हिन्दी साहित्य : सामान्य परिचय (सेमेस्टर प्रथम/द्वितीय/तृतीय)

भाग अ : परिचय			
कार्यक्रम : बैचलर ऑफ पर्फॉर्मिंग आर्ट्स (बी.ए./बीपीए/बी.एफ.ए.)डिग्री/ऑनर्स		प्रथम/ द्वितीय/तृतीय सेमेस्टर	सत्र : 2025 – 2026
9.	पाठ्यक्रम कोड	**AHINGE-01**	
10.	पाठ्यक्रम शीर्षक	हिन्दी साहित्य : सामान्य परिचय	
11.	पाठ्यक्रम का प्रकार	GE	
12.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुसार	
13.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	हिन्दी साहित्य भारत के बड़े भूभाग के अतिरिक्त प्रवासी भारतीयों के मानस को प्रतिबंधता है। हिन्दी साहित्य भारतीय संस्कृति के साथ लगभग भारत के डेढ़ हजार वर्षो की गतिशीलता का परिचायक है। अध्यात्मिक, भाषायी, राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टि से उसका अध्ययन विद्यार्थियों के लिए विशेष लाभप्रद होगा।	
14.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	1. अन्य विषयों के विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के विकास क्रम से परिचित होंगे। 2. भक्ति साहित्य और महान भक्त कवियों के व्यक्तित्व कृतित्त्व से परिचित होंगे। 3. हिन्दी के आंतरिक भाषा साहित्य विद्यार्थियों के लिए हितकारी होगा। 4. गद्य साहित्य और आधुनिक काव्यधारा से परिचित होंगे।	
15.	क्रेडिटमान	03 क्रेडिट	1 क्रेडिट=15 घंटे
16.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतम अंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई: 12)

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु

व्याख्यान–शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 45 अवधियाँ (45 घंटे)

इकाई	इकाई का नाम	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	आदिकाल/वीरगाथा काल	कालविभाजन एवं नामकरण, आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि तथा उसकी विभिन्न धाराओं का सामान्य परिचय	45 घंटे
द्वितीय	पूर्वमध्यकाल/भक्तिकाल, उत्तरमध्यकाल/रीतिकाल	भक्तिकालीन काव्य की विभिन्न धाराओं का सामान्य परिचय/भक्तिकाल की विशेषताएँ। रीतिकालीन काव्य का सामान्य परिचय, रीतिकालीन काव्य की विशेषताएँ।	
तृतीय	आधुनिककालीन हिन्दी	आधुनिक काल/गद्यकाल की पृष्ठभूमि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	

	काव्य एवं गद्य	और उनका युग, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, छायावादी एवं छायावादोत्तर हिन्दी काव्य, भारतेन्दु, द्विवेदी और प्रेमचन्दयुगीन, प्रेमचन्दोत्तर एवं समकालीन हिन्दी काव्य एवं गद्य का सामान्य परिचय।	

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
(छत्तीसगढ़)

लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पाठ्यक्रम

बी.पी.ए.(Bachelor of Performing Arts)

प्रथम सेमेस्टर, द्वितीय सेमेस्टर एवं चतुर्थ सेमेस्टर हेतु

विषय - लोक संगीत (SEC)

W.e.f. 2025-26

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
लोक संगीत एवं कला संकाय, लोक संगीत विभाग
बीपीए/बीपीए ऑनर्स (04 वर्षीय कोर्स)
विषय –लोक संगीत (सेमेस्टर प्रथम/द्वितीय/चतुर्थ)

भाग अ : परिचय				
कार्यक्रम : बीपीए/बीए/बीएफए/बीवोक प्रमाणपत्र/डिप्लोमा			सेमेस्टर (प्रथम/द्वितीय/चतुर्थ)	सत्र : 2025 – 2026
1.	पाठ्यक्रम कोड	FomSEC01		
2.	पाठ्यक्रम शीर्षक	छत्तीसगढ़ी लोक का आहार्य		
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार	एसईसी		
4.	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	कार्यक्रम के अनुरूप		
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन उद्देश्य	छत्तीसगढ़ी लोक संगीत और लोकनृत्यों में विशेष दक्षता प्राप्त करना इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है। सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर विद्यार्थी छत्तीसगढ़ी संस्कृति के लोकसांगितिक पक्ष से परिचित हो सकेगा।		
6.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (सीएलओ)	इस कोर्स को पूर्ण करने पर विद्यार्थी – • लोक वेशभूषा की जानकारी प्राप्त करेंगे। • लोक आभूषण की जानकारी प्राप्त करेंगे। • छत्तीसगढ़ के नृत्यों में प्रयुक्त सामग्री की जानकारी प्राप्त करेंगे।		
7.	क्रेडिट मान	03 क्रेडिट	1 क्रेडिट = 15 घंटे	
8.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 100 (एसईई: 70, सीसीई : 30)	न्यूनतमअंक : 40 (एसईई : 28, सीसीई : 12)	

भाग ब : पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु		
व्याख्यान–शिक्षण अवधियों की कुल संख्या = 45 अवधियाँ (45 घंटे)		
इकाई	विषय (पाठ्यक्रम सामग्री)	अवधियों की संख्या/ घण्टे
प्रथम	लोक वेशभूषा – सुवा, राऊत	15
द्वितीय	लोक आभूषण – सुवा, राऊत	15
तृतीय	छत्तीसगढ़ के नृत्यों में प्रयुक्त सामग्री – सुवा, राऊत	15

16.7.25

(प्रो.डॉ. राजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोक संगीत विभाग

भाग स : सीखने के संसाधन
सीखने के संसाधन–पाठ्य पुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, ऑनलाइन संसाधन और अन्य
संदर्भ ग्रंथ सूची – 1. प्रो. शरीफ मोहम्मद, मध्यप्रदेश का लोक संगीत 2. श्री रामकृष्ण तिवारी, छत्तीसगढ़ का लोक संगीत 3. डॉ. पीसी लाल यादव, छत्तीसगढ़ी लोकजीवन एवं पर्व 4. डॉ. दीपशिखा पटेल, अंगराग का लोकतत्व

भाग द : आँकलन एवं मूल्यांकन			
प्रस्तावित सतत मूल्यांकन विधियाँ :			
टधिकतम अंक :	100	न्यूनतम अंक	40
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	30	न्यूनतम अंक	12
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	70	न्यूनतम अंक	28
सीसीई (सतत व्यापक मूल्यांकन)	विषय के अनुसार आंतरिक परीक्षा का आयोजन। (सैद्धांतिक और तकनीकी ज्ञान एवं प्रस्तुति)		
एसईई (सेमेस्टर अंत परीक्षा)	तीन खंड : खंड अ –वस्तुनिष्ठ प्रश्न। खंड ब –लघु उत्तरीय प्रश्न। खंड स –दीर्घ उत्तरीय प्रश्न।		

(प्रो.डॉ. रंजन यादव)
विभागाध्यक्ष, लोक संगीत

(डॉ. पीसी लाल यादव)
बाह्य सदस्य, गंडई

(डॉ.दीपशिखा पटेल)
सहायक प्राध्यापक, लोकसंगीत विभाग